फाईलेरिया रोग पर चिकित्सीय अनुसंधान

● डी०पी० रस्तोगी, एन० मिश्रा

इस प्रपत्र में, केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् द्वारा स्थापित तीन अनुसंधान संस्थान जो फाईलेरिया रोग के अनुसंधान में कार्यरत हैं एवं जो आंध्र प्रदेश तथा उड़ीसा प्रान्तों में स्थित है का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। यह अनुसंधान 1 अप्रैल, 1985 से 31 मार्च, 1989 के बीच किया गया एवं इसमें विस्तृत अनुसंधान परिपत्र को प्रयोग में लाया गया। जबकि इस अनुसंधान में 3000 से अधिक फाईलेरिया रोगियों को पंजीकृत किया गया परन्तु 973 रोगी जो लगातार 4-5 वर्ष तक चिकित्साधीन रहे, उन्हीं का विवरण प्रस्तुत किया गया है ताकि होम्योपैथी की प्रभावकारिता का इस रोग में सही मूल्यांकन हो सके। इन रोगियों को निम्नलिखित औषधियों से लाभ हुआ :—

	औषधि का नाम	उपचारित रोगियों की संख्या	लाभान्वित रोगियों की संख्या
1.	रहस टाक्स	463	339
2.	ब्रायोनिया एल्बा	230	169
3.	सल्फर	200	133
4.	एपिस मैलिफिका	187	125
5.	नेट्रम म्युरियाटिकम	108	88
6.	पल्सैटिला	61	42
7.	रोहडोडेण्डरान	60	51
8.	सिलिशिया	50	31
9	थूजा	47	30

लाइकोपोडियम, मर्कयुरियस सोल्व्युलिस, कल्केरिया कार्ब, मिडोर्हाइनम, हाईड्रोकोटाईल एवं लैकिसिस, जब भी लक्षणों के आधार पर दी गई, लाभकारी पाई गई।

सी०सी०आर०एच० द्वारा वर्षों के इस अनुसंधान कार्य से रहस टाक्स, ब्रायोनिया एल्बा एवं एपिस मेलिफिका की इस रोग पर प्रभावकारिता की पुष्टि की है एवं इन औषधियों को राष्ट्रीय फाईलेरिया रोकथाम कार्यक्रम में शामिल किया गया है।

श्वसनी दमा के 413 रोगियों की होम्योपैथिक चिकित्सा

● हरी सिंह, सविता कटारा

श्वसनी दमा क्षेत्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान द्वारा किये जा रहे अनुसंधान कार्यों में से एक है। इसका मुख्य उद्देश्य है श्वसनी दमा में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करना। इस अध्ययन के अंतर्गत 1.4.80 से अब तक पंजीकृत किये गये 413 रोगियों को लिया गया है। इस प्रपत्र में श्वसनी दमा से संबंधित विभिन्न पहलुओं जैसे कि शरीर रचना, व्यक्तिगत एवं परिवार में एलर्जिक रोगों का इतिहास एवं विभिन्न कारक तत्वों की चर्चा भी की गई है।

चूंकि होम्योपैथिक चिकित्सा रोग पर आधारित न होकर वरन् व्यक्ति विशेष पर आधारित होती है इसलिए श्वसनी दमा की कोई निश्चित औषधि नहीं है।

इस अध्ययन में निम्नलिखित औषधियां मुख्य रूप से प्रभावकारी पाई गई।

	औषधि का नाम	पौटेन्सी	लाभान्वित रोगियों का प्रतिशत
1.	आर्सनिक एल्बम	30 से 10 एम०	76 प्रतिशत
2.	काली कार्ब	6,30,200	60 प्रतिशत
3.	पल्सैटिला	30,200, 1 एम०	64 प्रतिशत
4.	कार्बोवेजिटेविलिस	30,200, 1 एम०	71 प्रतिशत
5.	नैट्रम सल्फ	6,30,200, 1 एम०	75 प्रतिशत
6.	हिपर सल्फ	30,200	73 प्रतिशत

चिकित्सा के दौरान पूर्ण रोग मुक्ति की दृष्टि से निम्नलिखित औषधियों का मध्यमा (इंटरकरंट) के रूप में प्रयोग करने से लाभ हुआ।

		लाभान्वित रोगियों की संख्या
1.	सोराईनम 200, 1 एम०	6
2.	मिडोरहाईनम 2 सी०, 1 एम०	7
3.	टयुबर्कुलाईनम 2 सी०, 1 एम० 10 एम०	9
4.	कल्केरिया कार्ब 1 एम०, 10 एम०	8
5.	थूजा 2 सी०, 1 एम०, 10 एम०	5
6.	सल्फर 200, 1 एम०	6